3 John

1 Greetings from the Elder.
To my dear friend Gaius, a person I truly love.
2 My dear friend, I know that you are
doing well spiritually. So I pray that
everything else is going well with you and that
you are enjoying good health. 3 Some believers
came and told me about the truth in your
life. They told me that you continue to follow
the way of truth. This made me very happy.
4 It always gives me the greatest joy when I
hear that my children are following the way of
truth.

5 My dear friend, it is good that you continue
to help the believers. They are people you don't
even know. 6 They told the church about the
love you have. Please help them to continue their
trip. Help them in a way that will please God.
7 They went on their trip to serve Christ. They
did not accept any help from people who are not
believers. 8 So we should help them. When we
help them, we share with their work for the
truth.

9 I wrote a letter to the church, but Diotrephes
will not listen to what we say. He always wants
to be the leader. 10 When I come, I will talk with
him about what he is doing. He lies and says evil
things about us, but that is not all. He refuses to
welcome and help the believers who travel there.
And he will not let others help them. If they do,
he stops them from meeting with the church
anymore.

11 My dear friend, don't follow what is bad;
follow what is good. Whoever does what is good
is from God. But whoever does evil has never
known God.

12 Everyone says good things about Demetrius,
and the truth agrees with what they say. Also,

3 यूहन्ना

1यूहन्ना की ओर से:
प्रिय मित्र, गयुस के नाम जिसे मैं सत्य में
सहभागी के रूप में प्रेम करता हूँ।
2हे मेरे प्रिय मित्र, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू जैसे
आध्यात्मिक रूप से उन्नति कर रहा है, वैसे ही सब
प्रकार से उन्नति करता रह और स्वास्थ्य का आनन्द
उठाता रह। 2जब हमारे कुछ भाइयों ने मेरे पास
आकर सत्य के प्रति तुम्हारी निष्ठा के बारे में
बताया तो मैं बहुत आनन्दित हुआ। उन्होंने मुझे
यह भी बताया कि तुम सत्य के मार्ग पर किस
प्रकार चल रहे हो। 4मुझे यह सुनने से अधिक
आनन्द और किसी में नहीं आता कि मेरे बालक
सत्य के मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं।
5हे मेरे प्यारे मित्र, तुम हमारे भाईयों के हित में
जो कुछ कर सकते हो, उसे विश्वास के साथ कर
रहे हो। यद्यपि वे लोग तुम्हारे लिए अनजाने हैं!
6जो प्रेम तुमने उन पर दर्शाया है, उन्होंने कलीसिया
के सामने उसकी साक्षी दी है। उनकी यात्रा को
बनाए रखने के लिए कृपया उनकी इस प्रकार
सहायता करना जिसका समर्थन परमेश्वर करे।
7क्योंकि वे मसीह की सेवा के लिए यात्रा पर
निकल पड़े हैं तथा उन्होंने विधर्मियों से कोई सहायता
नहीं ली हैं। 8इसलिए हम विश्वासियों को ऐसे
लोगों की सहायता करनी चाहिए ताकि हम भी
सत्य के प्रति सहकर्मी सिद्ध हो सकें।
9एक पत्र मैंने कलीसिया को भी लिखा था किन्तु
दियुत्रिफेस जो उनका नेता बनना चाहता है। 10वह जो
कुछ हम कहते हैं, उसे स्वीकार नहीं करेगा। इस कारण
यदि मैं आऊँगा तो बताऊँगा कि वह क्या कर रहा है। वह
झूठे तौर पर अपशब्दों के साथ मुझ पर दोष लगाता है
और इन बातों से ही वह संतुष्ट नहीं है। वह हमारे बंधुओं
के प्रति आदर सत्कार नहीं दिखाता है बल्कि जो ऐसा
करना चाहते हैं, उन्हें भी बाधा पहुँचाता है और उन्हें
कलीसिया से बाहर धकेल देता है।
11हे प्रिय मित्र, बुराई का नहीं बल्कि भलाई का
अनुकरण करो! जो भलाई करता है, वह परमेश्वर
का है! जो बुराई करता है, उसने परमेश्वर को नहीं
देखा।
12दिमेत्रियुस के विषय में हर किसी ने साक्षी दी
है। यहाँ तक कि स्वयं सत्य ने भी। हमने भी

we say good about him. And you know that what
we say is true.
13 I have many things I want to tell you.
But I don't want to use pen and ink. 14 I
hope to visit you soon. Then we can be
together and talk. 15 Peace to you. The
friends here with me send their love.
Please give our love to each one of the
friends there.

उसके विषय में साक्षी दी है। और तुम तो जानते
ही हो कि हमारी साक्षी सत्य है।
13तुझे लिखने के लिए मेरे पास बहुत सी बातें
हैं किन्तु मैं तुझे लेखनी और स्याही से वह सब
कुछ नहीं लिखना चाहता। 14बल्कि मुझे तो आशा
है कि मैं तुझसे जल्दी ही मिलूँगा। तब हम आमने-
सामने बातें कर सकेंगे। 15शांति तुम्हारे साथ रहे।
तेरे सभी मित्रों का तुझे नमस्कार पहुँचे। वहाँ हमारे
सभी मित्रों को निजी तौर पर नमस्कार कहना।